NRL SEEDS

NRL-1160 Plus

पूर्वी क्षेत्र मक्का साहित्य

खेत का चयन और भूमि की तैयारी: खेत/मिट्टी अच्छी जल निकासी वाली, उपजाऊ और समतल होनी चाहिए। 5.5 से 7.5 पीएच वाली मिट्टी मक्का की खेती के लिए सबसे उपयुक्त होती है। 15 सेमी गहराई पर एक जुताई और उसके बाद दो बार हैरो चलाकर भूमि को अच्छी तरह से जुताई योग्य बना लें।

बीज उपचार: प्रारंभिक फंगल जनित रोगों से शीघ्र बचाव के लिए बीजों को मेटालैक्सिल या थाइरम के आधार उपचार से उपचारित किया जाता है। लक्षित कीटों और रोगों से बचाव के लिए,आवश्यकतानुसार बीजों को विशेष रसायनों से भी उपचारित किया जा सकता है।

बुवाई का समय: रबी: 15 अक्टूबर से दिसंबर के अंत तक

फसल अवधि: पूर्वी (बिहार/पश्चिम बंगाल/असम): 150-165 दिन

बीज दर और बीज बुआई की दूरी : 8-10 किग्रा/ एकर,पंक्ति से पंक्ति: 60 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे: 18-20 सेंटीमीटर।

Population/acre : 33,000 to 36,000 per acre

*ऊपर दी गई अनुशंसित पौधे की संख्या / एकर हमारे आंतरिक प्रयोगों पर आधारित है, जो मिट्टी के प्रकार, बढ़ने या विकास की परिस्थितियों पर आधारित है - बुआई और कटाई की जनसंख्या बदल सकती है

पोषक तत्व प्रबंधन: अधिक उपज के लिए संतुलित उर्वरक प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। बुवाई से कम से कम 10-15 दिन पहले या अंतिम जुताई या मिट्टी को समतल के दौरान 8-10 मीट्रिक टन गोबर की खाद (गोबर की खाद) का प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसके साथ ही निम्नलिखित संतुलित पोषक तत्वों का प्रयोग भी किया जाना चाहिए। नाइट्रोजन के बेहतर उपयोग के लिए नाइट्रोजन को तीन बार में डालना चाहिए।

80-90 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40-50 किलोग्राम फॉस्फोरस और 30-35 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ का प्रयोग करना चाहिए। नीचे उर्वरक के रूप में जानकारी दी गई है।



फसल अवस्था	भूमि की तैयारी (आधार,0 दिन) किलोग्राम/ एकर	घुटने की अवस्था(किलोग्राम /एकर)	पुष्पन की अवस्था (किलोग्राम /एकर)
उर्वरक की मात्रा किलोग्राम/एकड़	यूरिया:40-50	यूरिया: 60-70	यूरिया: 50-60
	डीएपी: 100-110		
	एमओपी: 40		एमओपी: 20-25
	जिंक सल्फेट: 8-10		

खरपतवार प्रबंधन:

• बुवाई के 48-72 घंटों के भीतर प्री-इमर्जेंट हर्बिसाइड एट्राज़ीन 50% WP @ 1 किग्रा/एकड़ + एलाक्लोर 50% EC @ 0.5 लीटर/एकड़ का प्रयोग करें।

•पोस्ट इमर्जेंट हर्बिसाइड का प्रयोग: टॉप्रामेज़ोन 33.6% Sc @ 30 मिली/एकड़ खरपतवार की 2-3 पत्ती अवस्था पर करें।

• खरपतवारों के प्रभावी नियंत्रण के लिए प्रयोग के समय मिट्टी में पर्याप्त नमी सुनिश्चित करें।

सिंचाई प्रबंधन:

अच्छे अंकुरण के लिए बुवाई के समय अनुकूलतम नमी सुनिश्चित करें। मक्के फसल के महत्वपूर्ण चरणों में तनाव उपज को प्रभावित कर सकता है। सिंचाई कार्यक्रम नीचे दिया गया है।

बुवाई	बुवाई के समय अनुकूलतम नमी सुनिश्चित करें
पहली सिंचाई	अंकुरण अवस्था
दूसरी सिंचाई	घुटने तक ऊँचाई की अवस्था
तीसरी सिंचाई	पुष्पन (टैसलिंग और सिल्किंग)की अवस्था
चौथी सिंचाई	दाना भरने की अवस्था

*ऊपर दी गई सिंचाई अवस्थाएं सिंचाई के लिए महत्वपूर्ण अवस्थाएं हैं, अधिक उपज के लिए पूरे फसल काल में अनुकूलतम नमी बनाए रखने का सुझाव दिया जाता है।

कीट नियंत्रण:

तना मक्खी" या "शूट फ्लाई": थियामेथोक्सम + लैम्ब्डा साइहैलोथ्रिन 100 मिली/एकड़का छिड़काव अंकुरण के लगभग 10 से 15 दिन बाद करें।

तना छेदक: क्लोरेंट्रानिलिप्रोएल 18.5% एससी @ 80 मिली प्रति एकड़ की दर से लगभग 30-45 दिन बाद छिड़काव करें।

फॉल आर्मीवर्म: लगभग 20% पौधों पर डेविस स्केल 3 के संक्रमण पर स्पिनेटोरम 11.7% एससी @ 100 मिली/एकड़ की दर से छिड़काव करें। गंभीरता के अनुसार 12-15 दिन बाद छिड़काव दोहराएँ।

कजरा कीट: घुटने की ऊँचाई तक अंकुरण के बाद: 100-150 लीटर पानी में 1.5 लीटर/एकड़ क्लोरपाइरीफॉस का मिट्टी में छिड़काव/मिट्टी को भिगोएँ। क्विनालफॉस 2.5 मिली/लीटर पानी का छिड़काव करें।

क्लाइम्बिंग कजरा कीट: घुटने की ऊँचाई से फूल आने से पहले की अवस्था तक: क्लोरएंट्रिलिप्रोल 60-80 मिली प्रति एकड़ 150 लीटर पानी के साथ छिड़काव करें।

रोग नियंत्रण:

पत्तियों से संबंधित रोग" या "पर्ण रोग": घुटने की ऊँचाई (30-35 दिन):पत्तियों से संबंधित रोग" या "पर्ण रोग" के प्रभावी नियंत्रण के लिए - बुवाई के 30 से 45 दिन बाद 200 मिली/एकड़ की दर से एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डाइफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w SC का रोगनिरोधी छिड़काव करें।

कटाई: मक्के का दाना लगभग 20-25% नमी पर शारीरिक परिपक्वताअवस्था में पहुँच जाता है, फसल कटाई के लिए तैयार हो जाएगी। कटाई से पहले दाने पर काली परत या भूरे छिलके की जाँच करें।

अपेक्षित उपज: रबी: 40-50 क्विंटल /एकर

नोट: मक्के की फसल को फूल आने से लेकर परागण तक, अनुकूलतम नमी, उचित तापमान और दिन की लंबाई की आवश्यकता होती है। यदि फूल आने के दौरान तापमान 10 डिग्री से कम है, तो परागण और दानों के भरने पर असर पड़ सकता है।

अस्वीकरण: ऊपर दी गई प्रबंधन पद्धतियों और औसत उपज संबंधी जानकारी केवल सांकेतिक है। प्रबंधन पद्धतियाँ और औसत अपेक्षित उपज मौसम, मिट्टी के प्रकार, प्रबंधन, मौसम की स्थिति और फसल चक्र के आधार पर भिन्न हो सकती हैं, जो हमारे नियंत्रण में नहीं है, इसलिए बीज की गुणवत्ता सुनिश्चित की जाती है।

NRL SEEDS

NRL-1160 Plus

রবি পূর্ব ভুট্টা সহিত এন.আর.এল -১১৬০ প্লাস

ক্ষেত নির্বাচন এবং জমি তৈরি: ক্ষেত/মাটি সুনিষ্কাশিত, উর্বর এবং সমতল হওয়া উচিত। ৫.৫ থেকে ৭.৫ pH বিশিষ্ট মাটি ভুট্টা চাষের জন্য সবচেয়ে ভালো। একবার ১৫ সেমি গভীরে চাষ দিয়ে জমি পুঙ্খানুপুঙ্খভাবে চাষ করুন।

বীজ শোধন: প্রাথমিক ছত্রাকজনিত রোগ প্রতিরোধের জন্য মেটালাক্সিল বা থিরামের বেস শোধন দিয়ে বীজ শোধন করা হয়। লক্ষ্যবস্তুযুক্ত পোকামাকড় এবং রোগ থেকে রক্ষা করার জন্য প্রয়োজন অনুসারে বীজকে নির্দিষ্ট রাসায়নিক দিয়েও শোধন করা যেতে পারে।

বপন মৌসুম: রবি: ১৫ অক্টোবর থেকে ডিসেম্বরের শেষ পর্যন্ত

ফসলের সময়কাল: পূর্ব (বিহার/পশ্চিমবঙ্গ/আসাম): ১৫০-১৬৫ দিন

বীজের হার এবং বীজ বপনের দূরত্ব: ৮-১০ কেজি/একর, সারি থেকে সারি: ৬০ সেমি এবং গাছ থেকে গাছ: ১৮-২০ সেমি।

গাছ সংখ্যা/একর: প্রতি একরে ৩৩,০০০ থেকে ৩৬,০০০

*উপরের প্রস্তাবিত উদ্ভিদ সংখ্যা/একর আমাদের অভ্যন্তরীণ পরীক্ষা-নিরীক্ষার উপর ভিত্তি করে তৈরি করা হয়েছে, যা মাটির ধরণ, বৃদ্ধি বা বিকাশের অবস্থার উপর নির্ভর করে পরিবর্তিত হতে পারে। বপন এবং ফসল কাটার সংখ্যা ভিন্ন হতে পারে।

পুষ্টি ব্যবস্থাপনা: উচ্চ ফলনের জন্য সুষম সার ব্যবহার অপরিহার্য।



বীজ বপনের কমপক্ষে ১০-১৫ দিন আগে অথবা চূড়ান্ত চাষ বা মাটি সমতলকরণের সময় ৮-১০ মেট্রিক টন গোবর সার (গোবর সার) প্রয়োগ করার পরামর্শ দেওয়া হয়। এছাড়াও, নিম্নলিখিত সুষম পুষ্টি উপাদানগুলি প্রয়োগ করা উচিত। নাইট্রোজেনের উন্নত ব্যবহারের জন্য, নাইট্রোজেন তিনটি প্রয়োগে প্রয়োগ করা উচিত।

প্রতি একরে ৮০-৯০ কেজি নাইট্রোজেন, ৪০-৫০ কেজি ফসফরাস এবং ৩০-৩৫ কেজি পটাশ ব্যবহার করুন। সারের তথ্য নিচে দেওয়া হল।

ফসল পর্যায়	জমি প্রস্তুতি (ভিত্তি, ০ দিন) কেজি/একর	গুঁড়ো করার অবস্থা (কেজি/একর)	ফুল ফোটার পর্যায় (কেজি/একর)
সারের পরিমাণ কেজি/একর	ইউরিয়া: ৪০-৫০	ইউরিয়া: ৬০-৭০	ইউরিয়া: ৫০-৬০
	ডিএপি: ১০০-১১০		
	এমওপি: 40 জিঙ্ক সালফেট: ৮-১০		মোপ: ২০-২৫

আগাছা ব্যবস্থাপনাঃ

বীজ বপনের ৪৮-৭২ ঘন্টার মধ্যে প্রাক-উদ্ভূত ভেষজনাশক অ্যাট্রাজিন ৫০% WP @ ১ কেজি/একর + অ্যালাক্লোর ৫০% EC @ ০.৫ লিটার/একর হারে প্রয়োগ করুন।

আগাছা পরবর্তী আগাছানাশক ব্যবহার: টপরামজোন ৩৩.৬% এসসি @ ৩০ মিলি/একর আগাছার ২-৩ পাতার পর্যায়ে।

কার্যকর আগাছা নিয়ন্ত্রণের জন্য প্রয়োগের সময় মাটির পর্যাপ্ত আর্দ্রতা নিশ্চিত করুন।

সেচ ব্যবস্থাপনা:

ভালো অঙ্কুরোদগমের জন্য বপনের সময় সর্বোত্তম আর্দ্রতা নিশ্চিত করুন। ভুট্টা ফসল উৎপাদনের গুরুত্বপূর্ণ পর্যায়ে চাপ ফলনের উপর প্রভাব ফেলতে পারে। সেচের সময়সূচী নীচে দেওয়া হল।

বপন	বীজ বপনের সময় সর্বোত্তম আর্দ্রতা নিশ্চিত করুন
প্রথম সেচ	অঙ্কুরোদগম পর্যায়
দ্বিতীয় সেচ	হাঁটু উচ্চ অবস্থা
তৃতীয় সেচ	ফুল ফোটার পর্যায় (ট্যাসেলিং এবং সিল্কিং)
চতুর্থ সেচ	শস্য ভরাট পর্যায়

*উপরের সেচের ধাপগুলি সেচের জন্য গুরুত্বপূর্ণ ধাপ, উচ্চ ফলনের জন্য ফসলের পুরো সময় জুড়ে সর্বোত্তম আর্দ্রতা বজায় রাখার পরামর্শ দেওয়া হয়।
কীটপতঙ্গ নিয়ন্ত্রণ:

কাণ্ডের মাছি বা কান্ডের মাছি: অঙ্কুরোদগমের প্রায় ১০ থেকে ১৫ দিন পরে থায়ামেথক্সাম ল্যাম্বডা সাইহ্যালোথ্রিন ১০০ মিলি/একর স্প্রে করুন।

কাণ্ড ছিদ্রকারী পোকা: প্রায় ৩০-৪৫ দিন পর প্রতি একরে ক্লোরানট্রানিলিপ্রোল ১৮.৫% এসসি @ ৮০ মিলি স্প্রে করুন।

শরৎ আর্মিওয়ার্ম: প্রায় ২০% গাছে ডেভিস স্কেল ৩ এর আক্রমণ দেখা দিলে স্পাইনেটোরাম ১১.৭% এসসি @ ১০০ মিলি/একর স্প্রে করুন। তীব্রতার উপর নির্ভর করে ১২-১৫ দিন পর পর স্প্রে পুনরাবৃত্তি করুন।

কাজরা পোকা: অঙ্কুরোদগমের পর হাঁটু পর্যন্ত উচ্চতা: মাটিতে ১.৫ লিটার/একর ক্লোরপাইরিফস ১০০-১৫০ লিটার পানিতে মিশিয়ে স্প্রে/সিঁটিয়ে দিন। কুইনালফস ২.৫ মিলি/লিটার পানিতে মিশিয়ে স্প্রে করুন।
আরোহণকারী কাজরা পোকা: হাঁটু উচ্চতা থেকে ফুল ফোটার পূর্ব পর্যায় পর্যন্ত: ক্লোরানট্রিলিপ্রোল ৬০-৮০ মিলি প্রতি একরে ১৫০ লিটার পানিতে মিশিয়ে স্প্রে করুন।

রোগ নিয়ন্ত্রণ:
পাতার রোগ: হাঁটু উচ্চতা (৩০-৩৫ দিন): পাতার রোগ কার্যকর নিয়ন্ত্রণের জন্য - বীজ বপনের ৩০ থেকে ৪৫ দিন পর প্রতি একরে ২০০ মিলি অ্যাজোক্সিস্ট্রোবিন ১৮.২% ডাব্লু/ডাব্লু + ডাইফেনোকোনাজল ১১.৪% ডাব্লু/ডাব্লু এসসি @ ২০০ মিলি স্প্রে করুন।

ফসল তোলা: ভুট্টার বীজ আনুমানিক ২০-২৫% আর্দ্রতায় শারীরবৃত্তীয় পরিপক্কতায় পৌঁছায় এবং ফসল ফসল তোলার জন্য প্রস্তুত হবে। ফসল তোলার আগে বীজের বীজে কালো বা বাদামী খোসার দাগ আছে
কিনা তা পরীক্ষা করে দেখুন।

প্রত্যাশিত ফলন: রবি: ৪০-৫০ কুইন্টাল/একর

দ্রষ্টব্য: ভুট্টার জন্য সর্বোত্তম আর্দ্রতা, সঠিক তাপমাত্রা এবং ফুল ফোটার সময় থেকে পরাগায়ন পর্যন্ত দিনের দৈর্ঘ্য প্রয়োজন। ফুল ফোটার সময় তাপমাত্রা ১০ ডিগ্রি সেলসিয়াসের নিচে থাকলে, পরাগায়ন এবং শস্য ভরাট প্রভাবিত হতে পারে।

দাবিত্যাগ: উপরে প্রদত্ত ব্যবস্থাপনা পদ্ধতি এবং গড় ফলন তথ্য শুধুমাত্র নির্দেশক। ব্যবস্থাপনা পদ্ধতি এবং গড় প্রত্যাশিত ফলন ঋতু, মাটির ধরণ, ব্যবস্থাপনা, আবহাওয়া এবং ফসলের আবর্তনের উপর নির্ভর করে পরিবর্তিত হতে পারে, যা আমাদের নিয়ন্ত্রণের বাইরে। অতএব, বীজের গুণমান নিশ্চিত করা হয়।